प्रातः सभा 4-8-68 ओमशान्ति पितश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्तिः शिव भगवानुवाचः बच्चों को समझाया है ऊंच ते ऊंच है भगवान। उनका नाम है शिव। बाप ही बच्चों को बैठ समझाते हैं। सिवाय बच्चों के बाप को तो कोई जान न सके। बच्चों को यह भी समझाना है बरोबर अभी है पुरुषोत्तम संगम युग। जैस बाप घड़ी2 कहते हैं अपन को आत्मा समझो। अपन को आत्मा समझो। यह तपस्याकरो। वैसे यह भी निश्चय रखो कि हम संगमयुगी हैं। यह संगम युग है। कलियुग नहीं है। संगम युग के बाद सतयुग आता है। बाप कहते हैं मैं भी आता हूं हूं संगम पर। जब कि दुनिया चेंज करनी होती है। नई दुनिया स्थापना कर ... पहले अक्षर स्थापनाकहना है। स्थापना के पहले विनाश नहीं कहना है। अक्षर हमेशा करेक्ट बतानी चाहिए। बाप ने समझाया है तीन मतें हैं। मनुष्य मत, ईश्वरीय और देवी मत। मनुष्य मत को मानव मत भी कहते हैं। कोई अपनी नई संस्था स्थापन करते हैं तो कहेंगे मानव मत की स्थापना की है। उन्हों को यह पता नहीं है कि मानव और मनुष्य मत एक ही हैं। मानव मत की भी भी संस्था है। तो अभी स्थापन हुई है। मनुष्य तो सभी मनुष्य ही हैं। मनुष्य मत को कहा जाता है आसुरी मत। क्योंकि रावण राज्य है। सारी सृष्टि में रावण राज्य है। रावण मत को ही कहा जाता है भ्रष्ट मत। क्योंकि मनुष्य भ्रष्टाचार विकार से पैदा होते हैं। वहां है देवी मत। निर्विकारी। उनको श्रेष्ठ मत कहेंगे। इनको भ्रष्ट कहेंगे। यह अक्षर अच्छी रीत याद करनी है। बाप बैठ तुम बच्चों को समझाते हैं। यह है ईश्वरीय मत। रुद्र ज्ञान-यज्ञ है तो रुद्रमत भी कह सकते हैं। अथवा शिवमत कहो। है भगवानुवाचः तो भगवान को जानना चाहिए ना। बाप आत्माओं को अपना परिचय देते हैं। क्योंकि भगवान जानते हैं कि मुझे कई मनुष्य जानते नहीं हैं। तुम ईश्वरीय सम्प्रदायहो। तो जरूर बाप को जानते होंगे। तुम्हारी देवीमत बन रही है। दोनो से बड़ी कौन सी? यह तो समझते हो सतयुग में ही होगी देवता मत। यहां कलियुग में है मानव मत। अभी मनवमत को देवता मत किसने बनाया? बाप ने। जिसको ही भगवान कहा जाता है। श्रेष्ठ शिव बाबा की है श्रेष्ठमत। देवताओं की है श्रेष्ट मत। फिर मनुष्यों की है भ्रष्ट मत। क्योंकि विकारी मत है। वह श्रेष्ठाचारी निर्विकारी मत है। निर्विकारी श्रेष्ट मतकिसने दी? बाप ईश्वर ने दी। तो तुम मत पर भी समझा सकते हो। यहां सभी मनुष्य ही मनुष्य हैं। देवता कोई है नहीं। कलियुग में होते ही हैं मनुष्य। मनुष्यों की मत है आसुरी। लड़ना झगड़ना उनको आसुरीमत कहा जाता है। ईश्वरीयमत को कोई जानते ही नहीं। बाप को भूलने से आसुरी मत हो जाती है। जब तक फाईनल देवीमत हो जाये तबतक —— मिक्सचर है। अपन से पूछना चाहिए हमारे में कोई आसुरी गुण तो नहीं हैं। लड़ते झगड़ते तो नहीं हैं। मैरे में क्रोध का भूत तो नहीं हैं। अगर क्रोध है तो वह मनुष्य आसुरी मत हो गई। ईश्वरीयमत नहीं ठहरे। फिर देवी मत जल्दी बन न सके। क्योंकि उस समय भूत की प्रवेशता हो जाती है। देह अभिमान है नम्बरवन भूत। देह-अभिमान होने से ही काम क्रोध .... आद भूत प्रवेश करते हैं। यह है ही भूतों की दुनिया। आसुरी दुनिया है ना। सभी में 5भूतों की प्रवेशता है। किसी मनुष्य की पूजा करना गोया 5भूतों की पूजा करना है। गुरुओं को भी पूजाकरते हैं। यह है भूत पूजा। वहां यह भूत पूजा होती ही नहीं। तुम तुम ब्राहमणकुल वंशी ही फिर देवताजन्म में आते हो। तुम्हारा यह ब्राहमण कुल है सर्वोत्तम कुल। जब कि तुमको नालेज मिलती है। अभी तुम समझते हो देवताओं में देवीगुण होते हैं। अगरतुम यहां देवी गुण न धारण करेंगे तो फिर सजा खाकर देवता बनेंगे। फिर भी ऊंच पद नहीं पा सकेंगे। इसलिए गायन है कोटों में कोऊ। आसुरी गुण होंगे, क्रोध होगा, देह-अभिमान होगा तो ऊंच पद नहीं पावेंगे। देवताओं में यह भूत होते ही नहीं। कोई क्रोध करते हैं समझो इन में भूत की प्रवेशता है। यह भूत सभी मनुष्यों में है। अपन को देखना है हमलड़ते-झगड़ते तो नहीं हैं। अथवा मनुष्यों मिसल चलन तो नहीं चलते हैं। क्योंकि अभी तुम बच्चों को देवी चलन वाला बनना है। अगरगन्दगी निकलती है तोसमझो है। भूतों से झट किनारा कर देना चाहिए। हिसर नो ईवील। सी नो ईवील। देह-अभिमान के कारण ही फिर ईवील छीछीगन्दगी की बातें आती हैं। वह फिर बहुत सजा खाते हैं। समझो कोई प्रजीडेन्ट का बच्चा है कुछ ऐसा ग

काम कर मजीस्ट्रेट के आगे जावेंगे तो कितनी ईज्जत जावेगी। मां बाप भी शर्मावेंगे यह क्या। [illegible] तरफ भी बड़े2 आदमी छी छी काम तरफ जाते हैं तो नाम-बदनाम हो जाता है। तुम्हारा भी नाम बहुत बदनाम होता है। अगर ईश्वर की बनकर फिर भूत की प्रवेशता होती है तो। कहते भी हैं बाबा आप आवेंगे तो हम आप के ही होकर रहेंगे। आप से ही वरसा लेंगे। बाप तो स्वर्ग की स्थापना करते हैं। वहां देहधारी की याद नहीं रहती। अभी तुम हो संगम युग पर। तो अभी ही बुरे2 संकल्प आते हैं। काफी मनुष्य को एक दिन का विकार का ही संकल्प आवेगा। रात अथवा दिन को भी गटर में ही गिरे रहेंगे। बही ख्यालात रहेंगी। बाप बैठ समझाते हैं माया बड़ी तीखी है। सबसे नम्बरवन है काम का संकल्प। बहुतों को आता है इस कारण ही झगड़ा चलता है। अखबार वाले भी इन बातों को क्या जाने। क्योंकि उनकी तो मनुष्य मत है ना। ज्ञान का तो उनको पता ही नहीं। कहते हैं यह भाई बहन बनाते हैं। और यह तो अच्छा है ना। क्रिमनल एसाल्ट न करेंगे। ब्रह्माकुमारी दो दोनो बहन भाई हो गये। उनको फिर विकार में जाना तो इनसल्ट है। कई ब्राह्मणियां कुमारियां जो सेन्टर पर रहती हैं वह भी कब सपाटे में आ जाती हैं। माया ऐसा ठूंसा जोड़ से लगती है जो एकदम गिर पड़ते हैं। फिर बाप भी क्या करे। लौकिक बाप भी देखते हैं हमारा बच्चा गंदा बन पड़ा है तो अन्दर ही घूटका खाते रहेंगे। यह भी ऐसे हैं। इस दादा को घूटका खाना पड़ता है। यह तो नाम-बदनाम कर देंगे। बाप कहते हैं बच्चे बाकसंग है। खबरदार न रहने से माया एकदम ठूंसा मार पस्त कर देगी। महाविकारी बन जाते हैं। तो वह है मानव मत। भ्रष्टाचारी मत। हरामज़ादे मत। नानक ने भी कहा है ना असंख्य चोर.... यह कोई नानक के सोल ने नहीं कहा है। यह तो जिसने ग्रन्थ बनाया उन्हों ने कहा है। क्योंकि नानक को तो आत्माआई और आकर सिक्खधर्म की स्थापना की। उस समय तो सिक्ख धर्म वाला कोई नहीं था। तो किसको कहेंगे असंख्य चोर... क्राईस्ट जब आवेगा क्रिश्चन धर्म स्थापन करने। क्राईस्ट तो होगा नहीं। फिर उस समय बाईबुल किस लिए बनावेंगे। किसके पढ़ने लिए बनावेंगे। [illegible] ही नहीं होते हैं। गुरुनानक भी आया तो उस समय वह धर्म था नहीं तो ग्रन्थ किसके लिए बनावेंगा। उसने तो आकर धर्म की स्थापना किया। फिर जब वह सिक्ख धर्म वृधि को पाया तब बाद में शास्त्र आदि बनते हैं। उस समय थोड़े ही लिखा है। यह सभी बाद में बनते हैं। बाईबल भी बाद में बना है। जोजो धर्म स्थापन करने आते हैं पहले तो अकेले ही आते हैं। पीछे वृधि को पाते हैं। जब लाखों करोड़ों हो जाते हैं तब ही राजाई स्थापन होते हैं। अभी एक बाप आया स्वर्ग की स्थापना करते हैं। एक को ही एडाप्ट किया। फिर ब्राह्मण पैदा होते रहे। अभी तो होशियार होते बाहर निकलते रहते हैं। शुरु में इतने होशियार नहीं थे। समझते थे कुछ ताकत है जो काम कर रहे हैं। गालियां इनको देते थे। क्राईस्ट के शरीर पर मार पड़ी। खुद तो पवित्र आत्मा आती है, उसने थोड़े ही कुछ किया जो सजा मिली। पाप तो कुछ भी किया नहीं। उनको पहले सुख फिर दुःख होता है। पवित्र आत्मा को पहले दुःख कैसे मिल सकता। तुम बच्चे जानते हो उनकी आत्मा अभी बेगर है। इस समय सभी तमोप्रधान हैं। तो एक है मानव मत यानि कि आसुरी मत। क्योंकि सभी रावण सम्प्रदाय हैं। देवताओं की भ्रष्ट मत नहीं होती। मनुष्यमत यानि भ्रष्ट मत। क्योंकि मनुष्य में ही 5 विकार हैं। देवताओं में 5 विकार होते ही नहीं। यह बाप ही आकर समझाते हैं। पहले2 तो इन देवताओं का राज्य था। उन्हों को यह दैवी मत किसने दी। 84 जन्म तो देवतायें ही शुरु करेंगे ना। दैवी गुणों से फिर आसुरी गुणों वाले बन जाते हैं। आपे ही पूज्य... भगवान के लिए यह नहीं कहेंगे। वह तो एवर पूज्य है। कहते हैं मैं कब पुजारी नहीं बनता हूं। वास्तव में एवर पूज्य भी नहीं हूं। क्योंकि सतयुग में तो मुझे कोई पूजते ही नहीं। जानते ही नहीं। इसलिए मैं एवर पूज्य भी नहीं हूं। वहां मुझे जानते ही नहीं। इसलिए मैं एवर पूज्य भी नहीं हूं। अभी तुम मुझे जानते हो। देवताओं से कब पूछा है क्या जो वह कहेंगे नेती2 हम नहीं जानते हैं। ऋषियों-मुनियों से पूछा। तो वह कहते थे नेती2, हम नहीं जानते। तो गोया न [illegible] ठहरे। देवताओं से थोड़े ही पूछा। तो यह सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। मानव मत में तो देह अभिमान।

5विकार। यह 5भूत ऐसे हैंजो छोड़ते ही नहीं। लड़ाई झगड़े ऐसे करते हैं। बाप कहते हैं कोई भी भूत हो तो उनको देखो भी नहीं। हियर नो ईवील। तुम देखते क्यों हो। भूतवाले के सामने खड़े रहेंगे तो तुम्हारे में भी प्रवेशता हो जावेगी। फिर झगड़ा हो जावेगा। कितने झगड़े होते रहते हैं। सारी दुनिया में अभी पच्छर माल है ना। पिछाड़ी है। सभी खत्म हो जावेंगे। क्योंकि पतित भ्रष्टाचारी है। तो तुम अमरलोक में जाते हो। जीते जी मरने लिए। तुमको कोई डर नहीं है। बाप को याद करते2 ऐसा(ल०ना०) बनना है। लड़ने वाले ऐसे थोड़े ही बनेंगे। वह तो पाई पैसे का पद पा लेंगे। क्योंकि भूत की प्रवेशता है। कोटों में को ऊ भी इसके लिए कहा जाता है। बाकी शास्त्रों में तो है दन्त कथाएं। थ्योरीटिकल। बहुत बातें बनाते हैं। जिसको बाबा धूति भी कहते हैं। पहला नम्बरव शास्त्र बनाने वाला नम्बरवन धूता। ऐसी कथाएं बनाई है जो मनुष्य गिरते ही जाते हैं। ग्लानो को बातें लिख दी हैं। गीता किसने लिखी। कहेंगे ब्यास भगवान ने। अभी उनकी तो आसुरी मत ही होगी ना। तो सभी झूठी बातें लिख दी हैं। रावण ने भी कमाल की है जो एकदम सभी को पत्थर बुधि बना दिया है। गीता झूठी महाभारत भी झूठा। युध के बीच में पाठशाला होती है क्या। यह भी चर्याई है ना। सारा मदार है गीता पर। पूछो हिन्दुधर्म किसने स्थापन किया। तो मुंझ पड़ते हैं। कृष्ण ने मानव मत स्थापन की या देवीमत स्थापन की? मनुष्यों के बिल्कुल ही पत्थरबुधि होने के कारणकुछ भी नहीं जानते। बापको गाली दे खुश होते रहते हैं। ईश्वर कुत्ते बिल्ले सभी में, हमारे में तुम्हारे में भी है। जिध रदेखता हूं तू ही तू। कुछ भी बुधि में आता नहीं। इसको कहा जाता है आसुरी मत। बाबा समझते हैं इन में क्रोध का भूत है यह क्या पद पावेंगे। फिर ख्याल करते हैं दास-दासियां आद भी तो चाहिए ना। यहराजधानी स्थापन हो रही है। बाप तो श्रेष्टबनने लिए श्रेष्ठ मत देते हैं। याद से ही पाप कटते रहेंगे। देवी गुण भी धारण करनी है। धारण तो यहां ही करनी है ना। इसलिए यह संगम युग मुख्य है। यहपुरुषोत्तम संगम युग अच्छी रीत याद करना है। पुरुषोत्तम अक्षर न लिखेंगे तो मनुष्य समझेंगे भगवान युगे2 आता है। सीढ़ी उतरनी होती है। जब चढ़ने का समय होता है तब इसको पुरुषोत्तम संगम युग कहा जाता हैं। जब कि सर्व का भला होता है। क तेरे भाने सर्व का भला ... नानक आया ही अकेला। तो फिर नीच किसको कहेंगे। नानक नीच कहे बिचार ... हजारे वार तुम पर बलिहार जावें। तू सदा सलामत .... वह निराकार निरअहंकार है ना। तो नानक भी उकनी महिमा गाते हैं। तो यह सभी बाप बैठ समझाते हैं। साहबज़ादे बनो तो शाहज़ादेबनने का सुख मिले। यहदादा भी कहेंगेपहले हम हराम्ज़ादे थे फिर साहबज़ादे, फिर शाहज़ादे बनेंगे। पतित से पावन साहब बनाते हैं। कितनी खुशी होती है। हराम्ज़ादा था। अभी सहबज़ादा है। फिर शाह-ज़ादा बनेंगे। अभी बहुत जन्मों के अन्त में सभी पतित हैं। बाप बच्चों से ही बैठ बात करते हैं। और कोई से नहीं करते। बच्चे हीसुनते हैं। सभी थोड़े ही शाहज़ादे बनने लायक हैं। पिछाड़ी में कर्मातीत अवस्था होनी है। तब बाप कहते हैं अति ईन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो। उस समय वह अडोल अवस्था रहती है। महावीर ने कहा ना मुझे कोई भी हिला नहीं सकते। माया सेतुम पिछाड़ी में छूटते हो। माया के साथ बहुत भारी युद्ध चलती है। बहुत लिखते हैं बाबा माया बड़ी तूफान में लाती हैं। स्त्री भी माया का रूप है। बाप को क हम याद कर नहीं सकते। स्त्री याद आती रहती। बाबाहम आप को बहुत याद करने का पुरुषार्थ करता हूं फिर भी बुधि चली जाती है। बाप कहते हैं तू=क तूफान भल आये। विकर्म न करना है। नहीं तो की कमाई चट हो जावेगी। 5मार से गिर पड़ते हैं। इन पर ही तुम कल्प2 जीत पहनते हो। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। यह बाप ही जानते हैं। बाबा के पास तो सभी समाचार आते हैं। बापदादा जानते हैं कौन2 क्या करते हैं। गुड़ जाने गुड़ की गोथरी जाने। ब्राहमणियों की भी रिपोर्ट आती है। लिखते हैं बाबा यह ब्राहमणी बहुत क्रोध करती है। प्रिन्सपाल को तो टीचर की रिपोर्ट देनी होती है ना। कोई2 का स्वभाव ही बहुतगंदा होता है। इनको कहा ही जाता है वेश्यालय। शिवालय की स्थापना शिव बाबा करते हैं। रावण क्या चीज है यह कोई भी नहीं जानते। अच्छा मीठे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।